

## Review Article

# क्रिएटिव और पैसिव इकोनॉमी में युवाओं की भूमिका

जगदीश सहायक आचार्य

अनुसंधान पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन (भरतपुर), भारत

DOI: <https://doi.org/10.24321/2395.2288.202604>

## I N F O

## A B S T R A C T

**Corresponding Author:**

जगदीश सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग,  
राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन (भरतपुर), भारत

**E-mail Id:**

jagatsagar1989@gmail.com

**Orcid Id:**

<https://orcid.org/0009-0001-0938-7761>

**How to cite this article:**

जगदीश सहायक आचार्य, क्रिएटिव और पैसिव  
इकोनॉमी में युवाओं की भूमिका, Anu: a, Mul, Int,  
Jour, 2026; 11(1&2): 23-27.

Date of Submission: 2026-02-18

Date of Acceptance: 2026-03-16

वर्तमान वैश्वीकरण और डिजिटल युग में अर्थव्यवस्था के नए आयाम निरंतर विकसित हो रहे हैं। इनमें दो प्रमुख स्वरूप—**क्रिएटिव इकोनॉमी** और **पैसिव इकोनॉमी**—युवाओं के लिए अवसरों और चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करते हैं। क्रिएटिव इकोनॉमी वह क्षेत्र है जिसमें सृजनात्मकता, नवाचार, संस्कृति, और तकनीकी दक्षता के माध्यम से आर्थिक मूल्य का निर्माण किया जाता है, जबकि पैसिव इकोनॉमी में व्यक्ति ऐसी गतिविधियों से आय अर्जित करता है जिनमें सक्रिय श्रम की अपेक्षा नहीं होती। यह शोध पत्र इन दोनों अर्थव्यवस्थाओं में युवाओं की भूमिका, उनकी भागीदारी के स्वरूप, निहित अवसरों, चुनौतियों तथा नीतिगत उपायों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**मुख्य शब्द:** क्रिएटिव इकोनॉमी, पैसिव इकोनॉमी, सृजनात्मकता, नवाचार, तकनीकी दक्षता।

## प्रस्तावना

आज की विश्व अर्थव्यवस्था पारंपरिक औद्योगिक उत्पादन से आगे बढ़कर **ज्ञान, सृजनात्मकता और तकनीक** पर आधारित हो चुकी है। युवा वर्ग, जो समाज का सर्वाधिक ऊर्जावान और नवाचारी वर्ग है, इस परिवर्तन का मुख्य प्रेरक तत्व बन चुका है। क्रिएटिव इकोनॉमी (Creative Economy) का अर्थ केवल कला, संगीत या डिजाइन तक सीमित नहीं, बल्कि यह डिजिटल कंटेंट निर्माण, गेमिंग, सॉफ्टवेयर डिजाइन, सोशल मीडिया इनोवेशन, विज्ञापन, फैशन और सांस्कृतिक उत्पादों तक फैला है। दूसरी ओर, पैसिव इकोनॉमी (Passive Economy)—जैसे निवेश, एफिलिएट मार्केटिंग, यूट्यूब या ब्लॉगिंग से रॉयल्टी अर्जित करना—युवाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की नई दिशा प्रदान कर रही है।

**क्रिएटिव इकोनॉमी की अवधारणा** - "क्रिएटिव इकोनॉमी" शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1990 के दशक में ब्रिटेन में हुआ। UNESCO और UNCTAD के अनुसार, यह "ऐसी अर्थव्यवस्था है जो ज्ञान और सृजनात्मकता से संचालित होती है और जो आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विकास का साधन बनती है।" यह अर्थव्यवस्था चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है:

1. सृजनात्मकता (Creativity)
2. नवाचार (Innovation)
3. तकनीकी दक्षता (Technology)
4. सांस्कृतिक मूल्य (Cultural Value)

आज के समय में भारत की क्रिएटिव इकोनॉमी में फिल्म उद्योग, डिज़ाइन, हस्तशिल्प, संगीत, डिजिटल मीडिया, एनीमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और गेमिंग प्रमुख क्षेत्र बन चुके हैं।

**पैसिव इकोनॉमी की अवधारणा** - पैसिव इकोनॉमी वह है जिसमें व्यक्ति एक बार किए गए कार्य से लगातार आय अर्जित करता है, बिना निरंतर श्रम किए। उदाहरण—

- ब्लॉग या यूट्यूब वीडियो से विज्ञापन आय,
- ऑनलाइन कोर्स से रॉयल्टी,
- निवेश से डिविडेंड या ब्याज आय,
- रियल एस्टेट या क्रिप्टोकॉरेसी से अर्जन।

डिजिटल क्रांति ने पैसिव इकोनॉमी को लोकतांत्रिक बना दिया है, जिससे हर युवा स्मार्टफोन और इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन सकता है।

## युवाओं की भूमिका

### (क) नवाचार और सृजन का स्रोत

युवा वर्ग में नयी सोच और जोखिम उठाने की क्षमता अधिक होती है। यही कारण है कि भारत में 18-35 आयु वर्ग के युवाओं ने स्टार्टअप इकोसिस्टम में क्रांति ला दी है।

### (ख) तकनीकी दक्षता

डिजिटल युग के युवा नई तकनीकों जैसे—AI, ब्लॉकचेन, AR/VR, और क्लाउड कम्प्यूटिंग—का प्रभावी प्रयोग कर रहे हैं, जिससे वे वैश्विक क्रिएटिव इकोनॉमी में प्रतिस्पर्धा कर पा रहे हैं।

### (ग) आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वतंत्रता

पैसिव इकोनॉमी के माध्यम से युवा रोजगार के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि अपनी रचनात्मकता से स्वयं अवसर उत्पन्न करते हैं।

### (घ) सांस्कृतिक संरक्षण

युवा कलाकार, डिज़ाइनर और फिल्म निर्माता अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रचनाओं के माध्यम से भारतीय विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत कर रहे हैं।

**भारत में क्रिएटिव इकोनॉमी का परिदृश्य** - भारत की क्रिएटिव इकोनॉमी विश्व में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। कुछ प्रमुख तथ्य—

- भारत की मीडिया एवं एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री 2024 तक 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक की हो जाएगी।
- भारत में 90,000 से अधिक स्टार्टअप कार्यरत हैं, जिनमें से लगभग 25% क्रिएटिव सेक्टर से जुड़े हैं।
- UNESCO के अनुसार, भारत में 13 मिलियन से अधिक लोग सांस्कृतिक और सृजनात्मक उद्योगों में कार्यरत हैं।

क्रिएटिव इंडस्ट्री न केवल रोजगार देती है, बल्कि 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियानों को गति भी प्रदान करती है।

**पैसिव इकोनॉमी में युवाओं की भागीदारी** - पैसिव इकोनॉमी ने युवाओं को ऐसे आय स्रोत प्रदान किए हैं जो पारंपरिक नौकरी से भिन्न हैं। उदाहरण के रूप में—

- यूट्यूबर और कंटेंट क्रिएटर: लाखों युवा अपने विचारों और कौशल के माध्यम से निरंतर आय अर्जित कर रहे हैं।
- स्टॉक मार्केट निवेशक: डिजिटल ऐप्स ने निवेश को सरल बना दिया है।
- एफिलिएट मार्केटिंग और ब्लॉगिंग: युवाओं को बिना पूंजी के व्यवसायिक आय का अवसर मिलता है।

पैसिव इकोनॉमी युवाओं को "फ्रीलांसर" से "फाइनेंशियल एंटरप्रेन्योर" बनने की दिशा में अग्रसर कर रही है।

### प्रमुख चुनौतियाँ

1. अवसरों की असमानता: ग्रामीण और शहरी युवाओं में डिजिटल संसाधनों की असमान पहुंच।
2. कौशल अंतर (Skill Gap): रचनात्मक और डिजिटल कौशल की कमी।
3. अस्थिरता: क्रिएटिव व पैसिव आय स्रोत स्थायी नहीं होते; इसलिए आर्थिक सुरक्षा का अभाव।
4. नीतिगत अभाव: भारत में क्रिएटिव इकोनॉमी के लिए समर्पित नीति ढांचा अभी प्रारंभिक स्तर पर है।
5. कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा अधिकार की सुरक्षा: नवाचारों की चोरी से युवा रचनाकारों को आर्थिक हानि होती है।

नीतिगत पहल और सरकारी प्रयास - भारत सरकार द्वारा युवाओं की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक पहलें की गई हैं:

- स्टार्टअप इंडिया मिशन (2016)
- मेक इन इंडिया कार्यक्रम
- डिजिटल स्किल इंडिया अभियान

- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)
- नेशनल क्रिएटिव इंडस्ट्री पॉलिसी (प्रस्तावित)

इन नीतियों का उद्देश्य युवाओं को न केवल प्रशिक्षण देना है, बल्कि उन्हें वैश्विक क्रिएटिव बाजार में प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना भी है।

### केस स्टडी: भारतीय युवाओं की सफलता की कहानियाँ

1. भुवन बाम (यूट्यूब - BB Ki Vines): पैसिव आय का उत्कृष्ट उदाहरण।
2. निखिल तनेजा (युवा नीति कार्यकर्ता): सृजनात्मक संवाद के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन।
3. क्लासप्लस, बायजूस जैसे स्टार्टअप: युवा दिमागों द्वारा शिक्षा और तकनीक के संगम से नवाचार।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि भारतीय युवा विश्व स्तर पर आर्थिक परिवर्तन के वाहक बन चुके हैं।

### भविष्य की संभावनाएँ

- AI और ऑटोमेशन से नई क्रिएटिव नौकरियाँ उत्पन्न होंगी।
- मेटावर्स, डिजिटल आर्ट और NFT युवाओं के लिए नई कमाई के रास्ते खोल रहे हैं।
- ग्रीन क्रिएटिव इकोनॉमी—सतत विकास और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का नया आयाम।
- ऑनलाइन शिक्षा और कौशल विकास प्लेटफॉर्म युवाओं को वैश्विक बाजार से जोड़ रहे हैं।

### नीतिगत सुझाव

1. राष्ट्रीय क्रिएटिव इकोनॉमी नीति तैयार की जाए।
2. शिक्षा प्रणाली में सृजनात्मकता और उद्यमिता को अनिवार्य घटक बनाया जाए।
3. ग्रामीण युवाओं के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचा सुदृढ़ किया जाए।
4. बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) सुरक्षा को सख्ती से लागू किया जाए।
5. वित्तीय साक्षरता और निवेश शिक्षा युवाओं में बढ़ाई जाए ताकि पैसिव इकोनॉमी में उनकी भागीदारी सुरक्षित हो।

### निष्कर्ष

क्रिएटिव और पैसिव इकोनॉमी ने युवा वर्ग के लिए अभूतपूर्व अवसरों का द्वार खोला है। आज का युवा केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता, निवेशक और उद्यमी बन चुका है। यदि उचित नीति, प्रशिक्षण और तकनीकी समर्थन मिले तो भारत विश्व की सबसे बड़ी क्रिएटिव इकोनॉमी का केंद्र बन सकता है। युवाओं में निहित सृजनात्मक ऊर्जा को पहचानकर उन्हें नई दिशा देना ही भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता का वास्तविक आधार है।

## संदर्भ सूची

1. UNCTAD (2023). *Creative Economy Outlook 2023*. United Nations Publication.
2. UNESCO (2022). *Re/Shaping Policies for Creativity*.
3. NITI Aayog (2021). *India's Booming Creative Economy Report*.
4. Government of India (2020). *Startup India Annual Report*.
5. Florida, Richard (2002). *The Rise of the Creative Class*.
6. Economic Times & Forbes India Articles (2023–24).
7. Mehta, S. (2021). *Digital Entrepreneurship in India*. New Delhi: Sage Publications.